प्रातः क्लास 13/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा और वरसा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बेहद का बाप बैठ समझाते हैं। यहाँ तुम बाप के सामने बैठे हो। घर से ही निकलते ही इस विचार हो कि हम जाते हैं शिवबाबा के पास जो ब्रह्मा के रथ में आकर हमको स्वर्ग का वरसा दे रहे हैं। हम स्वर्ग में थे फिर 84 का चक्र लगाकर अभी नर्क में आकर पड़े हैं। और कोई भी सतसंग में किसकी बुद्धि में यह बातें नहीं होंगी। तुम जानते हो हम शिवबाबा के पास जाते हैं। जो बाबा इ(स) रथ में आकर पढ़ाते हैं और हम आत्माओं को साथ भी ले जाते हैं। बेहद के बाप से जरूर बेहद का वरसा मिलना है। यह तो बाप ने समझाया है मैं सर्वव्यापी नहीं हूँ। सर्वव्यापी तो 5 विकार हैं। तुम्हारे में भी 5 विकार प्रवेश हैं इसलिए तुम महान दुखी हुए हो। ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है यह ओपीनियन जरूर लिखवाना है। तुम बच्चों को तो यह पक्का निश्चय है ईश्वर बाप सर्वव्यापी नहीं है। बाप सुप्रीम बाप है, सुप्रीम टीचर है, सुप्रीम गुरु है। बेहद का सद्गति दाता है, वही शान्ति देने वाला है। और कोई जगह ऐसे ख्याल नहीं करो कि क्या मिलना है। सिर्फ कनरामायण गीता आदि सुनते हैं। बुद्धि में अर्थ कुछ भी नहीं। आगे हम भी कहते थे परमात्मा सर्वव्यापी है। अभी बाप समझाते हैं यह तो झूठ है। यह तो बड़ी ग्लानि की बात है। तो यह भी ओपीनियन बहुत जरूरी है। आजकल जिनमें तुम ओपनिंग कराते हो, लिखते हैं ब्रह्माकुमारियाँ बहुत अच्छा काम कर रही हैं। बहुत अच्छी समझानी देती हैं। ईश्वर को प्राप्त करने का रास्ता बताती हैं। इससे सिर्फ लोगों के दिल पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। बाकी यह ओपीनियन कोई भी नहीं लिखकर देते कि दुनिया भर में जो मनुष्य कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है यह बड़ी भूल है। ईश्वर तो एक बाप, टीचर, गुरु है। एक तो मुख्य बात यह। दूसरा फिर ओपीनियन चाहिए कि इस समझानी से हम समझते हैं गीता का भगवान कृष्ण नहीं है। भगवान कोई मनुष्य वा देवता को नहीं कहा जाता। भगवान एक है, वह बाप है। उस बाप से ही सुख और शान्ति का वरसा मिलता है। ऐसे2 ओपीनियन लिखा कर लेनी है। अभी तुम जो भी ओपीनियन लिखाते हो वह कोई काम का नहीं लिखते हैं। हाँ, इतना लिखते हैं यहाँ बहुत अच्छी शिक्षा दी जाती है। बाकी मुख्य बात जिसमें ही तुम्हारी विजय होनी है। वह य... लिखाओ कि यह ब्रह्माकुमारियाँ सत्य कहती हैं कि ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है। वह तो बाप है। वही गीता का भगवान है। बाप आकर भक्तिमार्ग से छुड़ाकर ज्ञान देते हैं। यह भी ओपीनियन जरूरी है पतित–पावन पानी की गंगा नहीं; परन्तु एक बाप है। ऐसे2 ओपीनियन जब लिखें तब ही तुम्हारी विजय होनी है। अभी टाइम पड़ा है। अभी तुम्हारी जो सर्विस चलती है, इतना खर्चा होता है। यह तुम बच्चे ही एक/दो को मदद करते हो। बाहर वालों को तो कुछ भी पता नहीं। तुम्ही अपने तन, मन, धन से खर्चा कर अपने लिए राजधानी स्थापन करते हो। जो करता है वही पाता है। जो नहीं करते वह पावेंगे भी नहीं। कल्प2 तुम ही करते हो। तुम ही निश्चय बुद्धि होते हो। समझते हो बाप बाप भी है, टीचर भी है। गीता का ज्ञान भी यथार्थ रीति सुनाते हैं। भक्तिमार्ग में भल गीता सुनते आये; परन्तु राज्य थोड़े ही प्राप्त किया। वह झूठी गीता सुनते2 और ही झूठ खण्ड में आ गये हैं। तमोप्रधान बन पड़े हो। झूठ खण्ड को रजो, तमो कहा जाता है। सतोप्रधान से सतो में आये, फिर रावण राज्य हुआ तो रजो, तमो में आ गये। ईश्वरीय मत से बदल कर रावण आसुरी मत के हो गये। कैरेक्टर्स बिगड़ कर पतित बन पड़े। कुम्भ के मेले पर कितने करोड़ों की अन्दाज़ में जाते हैं। जहाँ2 भी पानी देखते हैं जाते हैं। समझते हैं पानी से पावन बनेंगे। अभी पानी तो जहाँ–तहाँ नदियों से आता रहता है। उनसे कोई पावन हो सकते हैं क्या? क्या पानी में स्नान करने से हम पतित से पावन बन देवता बन जावेंगे। अभी तुम समझते हो कोई भी पावन बन न सके। यह है भूल। तो इन तीन बातों पर ओपीनियन लेना चाहिए। अभी सिर्फ कहते हैं संस्था अच्छी है। तो बहुतों के अन्दर जो भ्रान्तियाँ पड़ी हुई है, ब्रह्माकुमारियों में जादू है, भगाते हैं वह ख्यालात दूर हो जाती है; क्योंकि आवाज़ तो बहुत फैला हुआ है ना। विलायत तक भी आवाज़ गया। इनको 16,108 रानियाँ चाहिए जिनमें से 400 मिल गई है; क्योंकि उस समय सतसंग में 400 आते थे। फिर वहाँ पहले2 जादू लगा मेहरानी को। हाहाकार मच गया। मेहतरानी को भी जादू लग गया। वहाँ से ही जादू का नाम

शुरू हो गया। इनमें जादू है। सुरमा पहनते हैं। कितने ढेर आते थे। कितना हंगामा मच गया। बड़ी पिकेटिंग आकर करते थे। बच्चियाँ बस से उतर छलांग मार कर आ जाती थी। वह सोये पड़े रहते थे। गायन है ना मिरवा मौत.....पिकेटिंग में हमेशा पत्थर मारते हैं। जब पत्थर मारने लगे तो झट टेलीफोन किया पुलिस आई पकड़ कर ले गये। बाप के आगे तो किसको चल न सके। सभी कहते थे यह जादूगर फिर कहाँ से आया। फिर वन्डर देखो बाबा तो करांची में था। आपे ही सारा झुण्ड आपस में मिलकर भाग आई। सभी को सुरमा पड़ गया। कोई को भी पता नहीं पड़ा हमारे घर से कैसे भाग गईं। कोई के गोद में बच्चा, कोई के पेट में बच्चा। कमाल कर दिया। यह भी ख्याल नहीं किया इतने सभी कहाँ जाकर रहेंगे। फिर फट से बंगला ले लिया। तो जादू की बात हो गई ना। अभी भी कहते रहते हैं यह जादूगरनी है। ब्रह्माकुमारियों पास जावेंगे तो फिर लोटेंगे नहीं। यह स्त्री–पुरुष को भाई–बहन बना देती हैं। फिर कितने तो आते ही नहीं। अभी तुम्हारी प्रदर्शनी आदि देख वह जो बातें बुद्धि में बैठी हुई हैं वह दूर होती जावेंगी। बाकी बाबा जो ओपीनियन चाहते हैं वह कोई नहीं लिखते हैं। बाबा को ओपीनियन चाहिए। यह लिखें कि गीता का भगवान बरोबर कृष्ण नहीं है। सारी दुनिया समझती है कृष्ण भगवानुवाच; परन्तु कृष्ण तो पूरे 84 जन्म लेते हैं। शिवबाबा है पुनर्जन्म रहित। तो इसमें बहुतों की ओपीनियन चाहिए। जो झूठ सिद्ध हो जाये। गीता सुनने वाले तो ढेर के ढेर हैं ना। फिर देखेंगे यह तो अखबार में भी निकल पड़ा है। गीता का भगवान परमपिता परमात्मा शिव है। वही बाप, टीचर, सर्व का सद्गति दाता है। शान्ति और सुख का वरसा सिर्फ उनसे मिलता है। बाकी अभी तुम इतने मेहनत करते हो, उद्घाटन करते हैं, सिर्फ भ्रान्तियाँ मनुष्यों के ठीक होते हैं। समझानी अच्छी मिलती है। बाकी बाबा जैसे कहते हैं ओपीनियन लिखें, अखबार में जाये तो उन्हों के जो इतने करोड़ शिष्य हैं उन्हों में रिवोल्यूशन मच जाये। यह क्या इतना समय हम झूठ सुनते आये। इसलिए बाप कहते हैं यह अभी नहीं होगा। सभी में फिर फूट पड़ जाये। यह कहते हैं कृष्ण भगवान है नहीं। वह तो सबसे जास्ती अर्थात् पूरे 84 जन्म लेते हैं। इस समय वह कहाँ होगा। जरूर बैगर होगा। जैसे क्राइस्ट के लिए भी कई समझते हैं कि वह बैगर के रूप में है। कोई क्या कहते, कोई क्या। पुनर्जन्म तो सभी मनुष्य जरूर लेते हैं ना। तो ओपीनियन मुख्य है यह। बाकी सिर्फ राय देते कि यह संस्था बड़ी अच्छी है। इससे क्या हुआ। हाँ, आगे चल जब स्थापना, विनाश नजदीक होगा तो तुमको यह ओपीनियन भी मिलेंगे। समझकर लिखेंगे। अभी तुम्हारे पास आने तो लगे हैं ना। अभी तुमको ज्ञान मिला है एक बाप के बच्चे हम सब भाई2 हैं। यह किसको भी समझाना तो बहुत सहज है सभी आत्माओं का बाप एक है। सुप्रीम बाबा। उनसे जरूर सुप्रीम बेहद का पद भी मिलना चाहिए। सो 5000 वर्ष पहले तुमको मिलाया। वह लोग कलियुग की आयु लाखों वर्ष कह देते। बाप कहते हैं सारे कल्प की आयु ही 5000 वर्ष है। कितना फर्क है। बाप समझाते हैं 5000 वर्ष पहले विश्व में शान्ति थी ना। यह एमऑबजेक्ट सामने खड़ा है। इनके राज्य में शान्ति थी। यह राजधानी हम फिर स्थापन कर रहे हैं। सारे विश्व में शांति सुख था। कोई दुख का नाम न था। अभी तो अपार दुख है। हम यह सुख–शान्ति का राज्य स्थापन कर रहे हैं अपने ही तन मन धन से गुप्त रीति। बाप भी है गुप्त। नालेज भी गुप्त। तुम्हारा पुरुषार्थ भी है गुप्त। इसलिए बाबा गीत, कविताएँ आदि भी पसन्द नहीं करते। वह है भक्ति मार्ग। यहाँ तो चुप। शान्ति से चलते–फिरते बाप को याद करना है। और सृष्टि का चक्र बुद्धि में फिराना है। अभी तुम्हारा अन्तिम जन्म है इस पुरानी दुनिया में। फिर हम नई दुनिया में पहला जन्म लेंगे। आत्मा पवित्र जरूर चाहिए। अभी तो सभी आत्माएँ पतित हैं। तुम आत्मा को पवित्र बनाने लिए बाप से योग लगाते हो। बाप खुद कहते हैं बच्चों देह के सहित देह के सभी सम्बन्ध छोड़ो। बाप नई दुनिया तैयार कर रहे हैं। उनको ही याद करो। और बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायें। अरे, बाप जो तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं, बादशाही देते हैं ऐ(से) बाप को तुम भूल कैसे जाते हो! वह कहते हैं इस अन्तिम जन्म सिर्फ पवित्र बनो। अभी इस मृत्युलोक

का विनाश सामने खड़ा है। यह विनाश भी हूबहू 5000 वर्ष पहले ऐसे ही हुआ था। एक धर्म की स्थापना अनेक धर्म खत्म हो गई। यह तो स्मृति में आता है ना। इनका राज्य था तो दूसरा कोई धर्म था ही नहीं। 5000 वर्ष की बात है। बाबा के पास कोई भी आता है तो उनसे पूछता हूँ, आगे कब मिले हो? कोई तो जो समझे हुए हैं वह झट कह देते हैं 5000 वर्ष पहले। कोई नया आता है तो मुँझ पड़ते हैं। बाबा समझ जाते हैं ब्राह्मणों ने समझाया नहीं है। फिर कहता हूँ सोच करो कब मिले हो। तो स्मृति आती है। यह बात तो और कोई पूछ न सके। पूछने का अकल आवेगा ही नहीं। वह क्या जाने इन बातों को। इसलिए बाबा कोई नये से मिलते भी नहीं हैं। तुम्हारे पास आगे चलकर बहुत सुनेंगे जो इस कुल के होंगे। दुनिया बदलनी तो जरूर है। चक्र का राज़ तो समझा दिया है। 5000 वर्ष का चक्र है। अभी नई दुनिया में जाना है। इस पुरानी दुनिया को भूल जाओ। बाप नया मकान बनाते हैं तो बुद्धि उसमें चली जाती है ना। पुराने मकान में फिर ममत्व नहीं रहता। यह फिर है बेहद की बात। बाप नई दुनिया स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। इसलिए अभी पुरानी दुनिया को देखते हुए न देखो। ममत्व नई दुनिया में रहे। इस पुरानी दुनिया से वैराग्य। वह तो हठयोग से हद का सन्यास कर जंगल में जाकर बैठते हैं। तुम्हारा तो यह है सारी पुरानी दुनिया से वैराग्य। इसमें तो अथाह दुख है। नई सतयुगी दुनिया में अपार सुख। तो जरूर उनको याद करेंगे। यहाँ तो सभी दुख देने वाले ही हैं। माँ–बाप सभी विकारों में ही फँसा देंगे। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। उनको जीतने से ही तुम जगतजीत बनेंगे। यह राजयोग बाप ही सिखलाते हैं। जिससे हम यह पद पाते हैं। बोलो, हमको स्वप्न में भगवान कहते हैं पा(वन) बनो तो स्वर्ग की राजाई मिलेगी। तो अब मैं एक जन्म पवित्र बन अपनी राजाई थोड़े ही गंवायेगी। इस पवित्रता की बात पर ही हंगामा चलता है। द्रौपदी ने भी पुकारा है यह दुशासन हमको नंगन करते हैं। यह भी खेल दिखाते हैं। द्रौपदी को कृष्ण 21 साड़ियाँ देते हैं। अभी बाप बैठ समझाते हैं ऐसे सभा बीच होता थोड़े ही है। यह तो मूर्खता की बात बैठ लिखी है। चित्र में भी दिखाया है पति विख के लिए मारता है, वह चिल्लाती है तो उनका ससुर, देवर, दोस्त आदि सभी आकर कहते हैं इनको विख दो। जुआ की बात भी शास्त्रों में लिखी है। द्रौपदी को दाव पर रखा। कितनी गंदगी डाल दी है। आजकल यहाँ भी ऐसे केस होते रहते हैं जो स्त्री को गिरवी में रख देते। कितनी दुर्गति हो गई है। अपार दुख है ना। सतयुग में अपार सुख था। अभी मैं आया हूँ अनेक धर्मों का विनाश, एक धर्म की स्थापना करने। अभी बाकी है आठ वर्ष। इस बीच स्थापना हो जावेगी। विनाश शुरू हो जावेगा। फिर हम चले जावेंगे। तुमने कर्मातीत अवस्था को पा लिया, लड़ाई शुरू हुई। मैं भागा। यह भी लिखा हुआ है रोते हैं, ओ हो! बाबा चला गया! ऐसे कोई रोने की बात है नहीं। यह तो बाबा कहते ही हैं हम चले जावेंगे। तुमको राजभाग देकर। बाप तो वानप्रस्थ अवस्था में चले जावेंगे। आधा कल्प फिर मेरी दरकार नहीं पड़ेगी। तुम कब याद भी नहीं करेंगे। तो बाप समझाते हैं तुम्हारे लिए जो सभी के दिल में उल्टा वायब्रेशन है वह निकलकर नाम ठीक हो रहा है। बाकी मुख्य बात है ओपीनियन लिखा लो। ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है। उसने तो आकर राजयोग सिखाया, पतित–पावन भी वह बाप ही है। पानी की नदियाँ थोड़े ही पावन बना सकेंगी। पानी तो सभी जगह होता है। बेहद का बाप अभी कहते हैं अपन को आत्मा समझो। देह सहित देह के सभी सम्बन्ध छोड़ो। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। वह फिर कह देते आत्मा निर्लेप है। आत्मा सो परमात्मा। यह है भक्तिमार्ग की बात। बच्चे कहते हैं बेहद के बाप को याद कैसे करें? अरे अपन को आत्मा तो समझते हो ना। आत्मा कितनी छोटी बिन्दी है। तो उनका बाप भी इतना छोटा होगा ना। वह पुनर्जन्म में नहीं आता है। यह बुद्धि में ज्ञान है। बाप याद क्यों नहीं आवेगा। चलते–फिरते बाप को याद करो। अच्छा बड़ा रूप ही समझो बाप का; परन्तु याद तो एक को करो ना तो तुम्हारे पाप कट जायें। और तो कोई उपाय नहीं। जो समझते हैं वह कहते हैं बाबा आपके याद से ही पावन बन पावन दुनिया विश्व के मालिक बनते तो हम क्यों नहीं याद करेंगे। एक/दो को भी याद दिलाना है तो पाप कट जायें। अच्छा गुडमॉर्निंग।